APEX PROFESSIONAL UNIVERSITY
Statutory University u/s 2(f) UGC Act,1956

Bhartiya Knowledge Systems
Volume II, Issue I, June 2024

श्रीमद भगवद गीता और शिक्षक-छात्र के बीच सम्बन्ध का सार

विश्वज्योति शर्मा[1]

सारांश: श्रीमद भगवद गीता में शिक्षक-छात्र के संबंध का सार एक अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व है। इसके अनुसार, जब छात्र गुरु के प्रति विश्वासपूर्वक आदर और प्रेम रखता है, तब उसे स्वयं को सीखने की प्राप्ति होती है। गुरु छात्र के लिए मार्गदर्शक होता है, जो उसे सही और आदर्श मार्ग पर ले जाता है। इस संबंध में गीता एकता, विश्वास और सहयोग को प्रमुखता देती है जो समस्याओं को हल करने में मदद करता है। गीता छात्र को आत्मिक उन्नति के माध्यम से उच्चतम ज्ञान का प्राप्तकर्ता बनाती है और उसे ब्रह्मांडिक चेतना के साथ संयुक्त करती है। इस प्रकार, गीता शिक्षक-छात्र के संबंध का महत्वपूर्ण सार सार्थकता से प्रस्तुत करती है।

मूल शब्द: श्रीमद भगवद गीता, शिक्षक के गुण, छात्र के गुण, शिक्षक-छात्र सम्बन्ध

परिचय

श्रीमद भगवद गीता का शाब्दिक अर्थ है 'भगवान का गीत' यह भगवान कृष्ण द्वारा अनिच्छुक अर्जुन को युद्ध के लिए प्रेरित करने के लिए दिया गया दार्शनिक प्रवचन है। उसे प्रेरित करने के लिए भगवान कृष्ण ने अर्जुन को कुरुक्षेत्र के युद्ध क्षेत्र में अपना कर्तव्य करने के लिए परामर्श के रूप में भगवद्गीता का उपदेश दिया। गीता केवल कुरुक्षेत्र के युद्ध क्षेत्र में अर्जुन को दी गई सलाह नहीं है, बल्कि यह 'होने या न होने' के अनिर्णय के चंगुल में फंसी सभी मानव जाति के लिए एक सार्वभौमिक संदेश है। इसे वैदिक दर्शन के सबसे महान ग्रंथों में से एक माना जाता है। भगवद गीता आध्यात्मिक और भौतिक जीवन जीने के तरीके दिखाती है। भगवद गीता को सभी वैदिक दार्शनिक विचारों का सार माना जाता है। भगवद गीता में कर्म योग, ज्ञान योग और भक्ति योग को समान करने का बहुत प्रयास किया गया है, जिसमें शिक्षा का अर्थ सुगंधित है। व्यक्ति अपने इरादे और समझ के स्तर के अनुसार भगवद्गीता से फल प्राप्त कर सकता है। शिक्षा के चश्मे से शैक्षिक दर्शन के सभी पहलुओं, यानी शिक्षा का अर्थ, शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षणशास्त्र, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ, मूल्यांकन तकनीक और शिक्षार्थी और शिक्षक की भूमिकाओं को खोजा और व्याख्यायित किया जा सकता है। इसलिए, भगवद गीता को एक शैक्षिक दर्शन के रूप में लिया जा सकता है, क्योंकि इसमें एक शैक्षिक दर्शन के सभी घटक शामिल हैं। स्थिर मन और बुद्धि से तीनों क्रोधों (हार, क्रोध और भय) से छुटकारा पाकर आनंद, संतुष्टि और मोक्ष की प्राप्ति के लिए अपने कर्तव्यों का पालन करना ही शिक्षा का अर्थ है जो भगवद गीता में पाया जाता है। यह हमें अपनी इच्छाओं और भावनाओं को प्रबंधित करने, कार्यों के उचित विकल्प बनाने और कठिन परिस्थितियों से निपटने के तरीकों में मदद करती है। यह हमें बताती है कि कैसे हम अपने प्यार और देखभाल की भावनाओं को ईर्ष्या, जलन आदि से मुक्त करें। ताकि वे बिना किसी विकृति के बहें और पूरी मानवता को शामिल करें। सच्ची शिक्षा बच्चों को न केवल बौद्धिक उत्तेजना प्रदान करती है, बल्कि जीवन का एक वास्तविक उद्देश्य भी प्रदान करती है। भगवद् गीता शिक्षा का पवित्र ग्रंथ है क्योंकि यह सभी सिद्धांतों और दर्शनों का सार है। यह सबसे शुद्ध ज्ञान प्रदान करता है और आत्म-साक्षात्कार की प्रत्यक्ष समझ देता है।

गीता में भगवान कृष्ण द्वारा अर्जुन को धार्मिक मुद्दों पर उपदेश दिया गया है और इसमें शिक्षक-छात्र के सम्बन्ध का भी महत्वपूर्ण प्रतिष्ठान है। शिक्षक-शिक्षा पूर्ण विश्वास और प्रेम से एक साथ बंधे हुए हैं। अतः ऐसी स्थिति में सीखना अपने आप

[1] **विश्वज्योति शर्मा,** सहायक आचार्य, त्यागबीर हेम बरुआ कॉलेज, असम- ७८४१८९, Phone:7002079466/8798238701, E-Mail: biswajyoti.sarmah26@gmail.com

शुरू हो जाता है जहाँ विद्यार्थी को किसी समस्या का सामना नही करना पड़ता है। विद्यार्थी स्वेच्छा से स्वयं को पूर्ण विश्वास के साथ शिक्षक के समक्ष समर्पित कर देता है। यह शिष्य को उस व्यक्ति के रूप में परिभाषित करता है जो स्वेच्छा से स्वयं को शिक्षक के सामने प्रस्तुत करता है जहां अनुशासन सीखने की विधि है। सीखने और अनुशासन के तरीके इतने सही हैं कि प्रक्रिया के पूरा होने पर जब छात्र अपनी शंकाओं से पूरी तरह मुक्त हो जाता है और उसकी समझ बहुत स्पष्ट हो जाती है। गीता शिक्षक और छात्र की एकता और एकीकरण, उनके आपसी विश्वास, और समस्याओं को हल करने के लिए उनके सहकारी प्रयास पर प्रकाश डालती है। संकट ने अर्जुन में अचानक परिवर्तन ला दिया है। कृष्ण ने अपने जीवन में इस मोड़ का धैर्यपूर्वक इंतजार किया। 'प्रेयस' (जो इंद्रियों को भाता है) के अंतर्गत आने वाले सभी को उस व्यक्ति को प्रदान किया जा सकता है जिसने रिश्तेदारी का दावा किया और शिक्षक के साथ समान स्थिति पर कब्जा कर लिया। 'श्रेयस'(जो आत्मा के लिए अच्छा है) के लिए शिष्य का श्रद्धापूर्ण भाव नितांत आवश्यक है। यह रोशनी के अचानक विस्फोट के रूप में आता है जो प्राप्तकर्ता को एक दिव्य अस्तित्व में बदल देता है। एक छात्र आवश्यक मानसिक शुद्धि के तहत संदेश को तुरंत पकड़ लेता है और उसकी व्यक्तिगत चेतना को ब्रह्मांडीय चेतना के साथ विलीन कर देता है।

भगवद गीता और शिक्षा

शिक्षा मनुष्य में पूर्णता पैदा करने की प्रक्रिया है। इसका तात्पर्य है कर्म और धार्मिक जीवन के लिए ज्ञान, कौशल, क्षमता और बुद्धि। भगवद गीता के अनुसार शिक्षा के सिद्धांतों को तैयार करने के लिए दिव्य शिक्षक भगवान कृष्ण ने अपने शिष्य को दूसरों की तरह हुक्म के रूप में अपना ज्ञान नहीं दिया है। गीता ऐसी शिक्षा के 'क्यों' का उत्तर देती है। दुनिया में मानव बच्चा कोई सारगर्भित या खाली प्राणी नहीं है। उसे अपने पिछले जीवन से कुछ प्रवृत्तियाँ, सहज ज्ञान, चरित्र की प्रवृत्तियाँ, मानसिक स्वभाव आदि विरासत में मिलते हैं। माता-पिता बच्चे को उसका भौतिक तंत्र देते हैं और आत्मा का काम उसका अपना होता है। यह व्यक्तिगत अंतरों को स्पष्ट करता है। भगवद गीता शिक्षा के सिद्धांतों को स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि शिक्षा आध्यात्मिक-सामाजिक आवश्यकता है। यह एक मूल्य है और इसकी इमारत रेत पर नहीं बनाई जा सकती।

- गुरु की महिमा: गीता में गुरु की महिमा का वर्णन बहुत उच्चता और पवित्रता के साथ किया गया है, जिसमें गुरु को ईश्वर का प्रतिबिम्ब बताया गया है। इसका तात्पर्य यह है कि गुरु में ईश्वर की दिव्यता और उनके गुणों का अनुभव किया जा सकता है। गुरु की सेवा केवल एक कर्तव्य नहीं, बल्कि एक ऐसा कार्य है जिसे अनन्य भाव से, श्रद्धा और प्रेम के साथ किया जाना चाहिए। गुरु अपने ज्ञान, अनुभव और आचरण से छात्र के जीवन को प्रकाशित करते हैं, उसे दिशा देते हैं और उसकी अज्ञानता को दूर करते हैं। वे ज्ञान के प्रमुख स्रोत होते हैं, और उनके मार्गदर्शन से ही छात्र आत्म-संयम, ज्ञान और समाधान की प्राप्ति करता है। गीता में यह भी उल्लेख है कि छात्र को गुरु को आदर्श मानते हुए उनके प्रति सम्मान और समर्पण का भाव रखना चाहिए। यह सम्मान और समर्पण न केवल गुरु के प्रति आस्था का प्रतीक है, बल्कि यह छात्र के आत्म-विकास और जीवन की उन्नति के लिए भी आवश्यक है। गुरु के प्रति यह श्रद्धा और समर्पण ही छात्र को सही मार्ग पर ले जाता है और उसे अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सक्षम बनाता है। इस प्रकार, गीता में गुरु की महिमा और उनके प्रति श्रद्धा का महत्व अत्यंत विस्तृत और गहरा है।

- गुरु की भूमिका: गीता में गुरु की भूमिका को अत्यंत महत्वपूर्ण और उच्चाकांक्षी बताया गया है। गुरु वह व्यक्ति है जो छात्र को ज्ञान का स्रोत प्रदान करता है और उसे सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है। गुरु के माध्यम से छात्र को न केवल शास्त्रों का ज्ञान मिलता है, बल्कि जीवन की वास्तविकताओं और आध्यात्मिकता का भी बोध होता है। गीता में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि छात्र को गुरु की शरण में जाना चाहिए, जिसका अर्थ है कि उसे गुरु की

शिक्षा और मार्गदर्शन को पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ स्वीकार करना चाहिए। गुरु की आदर्शता, उनके आचरण और उनके द्वारा दी गई शिक्षा में छात्र का विश्वास और निष्ठा होना अनिवार्य है, क्योंकि यही विश्वास और निष्ठा छात्र के जीवन को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। गुरु के प्रति यह सम्मान और समर्पण ही छात्र को अपने जीवन में उन्नति और सफलता की ओर ले जाता है। गुरु की शिक्षाओं से प्रेरित होकर छात्र आत्म-संयम, ज्ञान और समाधान प्राप्त करता है, जो उसके जीवन को हर दृष्टि से समृद्ध बनाते हैं। इस प्रकार, गीता में गुरु की भूमिका को न केवल ज्ञान देने वाले के रूप में, बल्कि जीवन के मार्गदर्शक के रूप में भी उच्च महत्व दिया गया है।

- छात्र की भूमिका: गीता में छात्र की भूमिका पर विशेष जोर दिया गया है, जो उनके समग्र विकास और आत्म-साक्षात्कार के लिए महत्वपूर्ण है। एक छात्र को ज्ञान प्राप्त करने के लिए संकल्पित और प्रतिबद्ध होना चाहिए, क्योंकि यह संकल्प ही उसे गुरु के मार्गदर्शन को सही ढंग से समझने और आत्मसात करने में सक्षम बनाता है। गुरु के प्रति आदर्श और समर्पण दिखाना, छात्र की प्रमुख जिम्मेदारी है, क्योंकि गुरु के प्रति श्रद्धा और सम्मान ही ज्ञान प्राप्ति का द्वार खोलते हैं। गीता में यह भी बताया गया है कि छात्र को गुरु की शिक्षा को न केवल समझना चाहिए, बल्कि उसे अपने जीवन में अमल में लाने के लिए भी तत्पर रहना चाहिए। विश्वास, निष्ठा, संयम और श्रद्धा जैसे गुण एक छात्र के लिए अनिवार्य हैं, क्योंकि ये गुण उसे ज्ञान के सही अर्थ को समझने और उसे जीवन में लागू करने में सहायता करते हैं। इसके साथ ही, छात्र को विनम्रता और समर्पण की भावना रखनी चाहिए, क्योंकि यह भावना उसे गुरु से अधिक से अधिक सीखने और आत्म-संयम की राह पर चलने के लिए प्रेरित करती है। इस प्रकार, गीता में छात्र की भूमिका को न केवल शिक्षा प्राप्ति के दृष्टिकोण से, बल्कि जीवन की संपूर्णता को समझने और उसे सार्थक बनाने के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण बताया गया है।

- ज्ञान का प्रसार: गीता में ज्ञान के प्रसार का महत्वपूर्ण सिद्धांत प्रतिपादित किया गया है, जिसमें गुरु की भूमिका केंद्रीय होती है। गुरु वह व्यक्ति है जो छात्र को ज्ञान की धारा से परिचित कराता है और उसे सही और उच्चतम मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है। ज्ञान का प्रसार वाणी, वाचन, और आचरण के माध्यम से होता है, यानी गुरु के शब्द, उनके उपदेश और उनके स्वयं के आचरण से होता है। इसके लिए छात्र को गुरु की बात सुनने की क्षमता विकसित करनी होती है, जिसे वह ध्यान और समर्पण के साथ ग्रहण कर सके। केवल सुनना ही पर्याप्त नहीं होता, बल्कि गुरु की शिक्षा को गहराई से समझना और उसे जीवन में लागू करना भी आवश्यक होता है। गुरु छात्र को उच्चतम ज्ञान प्राप्त करने के लिए ध्यान और मनन के माध्यम से प्रेरित करता है, ताकि छात्र उस ज्ञान को आत्मसात कर सके और अपने जीवन में उसकी सार्थकता को समझ सके। गीता में ज्ञान का प्रसार एक पवित्र और महत्वपूर्ण प्रक्रिया के रूप में देखा गया है, जिसमें गुरु और छात्र दोनों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। गुरु अपने ज्ञान और अनुभव से छात्र का मार्गदर्शन करता है, जबकि छात्र को विनम्रता, समर्पण और एकाग्रता के साथ उस ज्ञान को प्राप्त करने और उसे अपने जीवन में लागू करने का प्रयास करना चाहिए। इस प्रकार, गीता में ज्ञान के प्रसार की प्रक्रिया को एक आदर्श शिक्षक-छात्र संबंध के माध्यम से समझाया गया है, जो जीवन के प्रत्येक पहलू को समृद्ध और सार्थक बनाता है।

- आंतरिक परिवर्तन: गीता में शिक्षक-छात्र संबंध का मुख्य उद्देश्य छात्र के आंतरिक परिवर्तन को सुनिश्चित करना है। गुरु के उपदेश और मार्गदर्शन का लक्ष्य छात्र के भीतर निहित ज्ञान को जागृत करना, उसकी चेतना को विस्तारित करना, और उसे आत्मसाक्षात्कार की ओर प्रेरित करना है। यह संबंध केवल बाहरी शिक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि

आंतरिक विकास और आत्म-साक्षात्कार की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। गीता सिखाती है कि छात्र को गुरु के उपदेशों को अपने जीवन में लागू करना चाहिए, ताकि वह न केवल शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त कर सके, बल्कि उसे आत्मिक स्तर पर भी समझ सके। आध्यात्मिक विधानों का अभ्यास, जैसे ध्यान, मनन, और योग, छात्र को अपने भीतर की गहराईयों को जानने और आत्मसंयम के माध्यम से अपनी स्वाभाविक स्थिति को पहचानने में मदद करते हैं। इस प्रक्रिया में, छात्र को अपने अहंकार को त्याग कर विनम्रता और समर्पण की भावना से गुरु के मार्गदर्शन को अपनाना होता है। गुरु के उपदेश छात्र को आंतरिक शांति, संतुलन, और आत्मज्ञान की ओर ले जाते हैं, जिससे उसका जीवन हर दृष्टि से समृद्ध और पूर्ण बनता है। इस प्रकार, गीता में शिक्षक-छात्र संबंध का मुख्य उद्देश्य आंतरिक परिवर्तन और आत्मसाक्षात्कार की प्राप्ति के रूप में चित्रित किया गया है, जो जीवन के हर पहलू को गहराई से प्रभावित करता है।

- मोक्ष और आत्मसाक्षात्कार: गीता में यह स्पष्ट रूप से समझाया गया है कि मानव जीवन का सबसे उच्च और परम लक्ष्य मोक्ष और आत्मसाक्षात्कार है। छात्र और गुरु के संबंध का मुख्य उद्देश्य छात्र को इस अंतिम लक्ष्य की प्राप्ति में सहायता करना है। गुरु का मार्गदर्शन छात्र को ईश्वरीय आत्मा की सच्चाई में पहुंचने में मदद करता है, जिससे वह अपनी वास्तविक प्रकृति को पहचान सके। गुरु के उपदेश और शिक्षा के माध्यम से छात्र अपने अहंकार की सीमाओं को पार करता है, जो उसे भौतिक बंधनों और मानसिक भ्रमों से मुक्त करता है। इस प्रक्रिया में, छात्र अपने भीतर की गहराईयों में जाकर आत्ममूल्य और स्वाभाविक स्थिति को समझता है। गुरु के मार्गदर्शन से प्राप्त ज्ञान और आध्यात्मिक अभ्यासों के माध्यम से छात्र अपनी आंतरिक चेतना को विस्तारित करता है और दिव्यता का अनुभव करता है। इस प्रकार, गुरु के साथ छात्र का संबंध केवल शिक्षा का माध्यम नहीं है, बल्कि यह आत्मिक जागृति और मुक्ति की ओर एक पथप्रदर्शक के रूप में कार्य करता है। गीता में बताया गया है कि गुरु के मार्गदर्शन में चलकर छात्र मोक्ष की दिशा में अग्रसर होता है, जो जीवन-मरण के चक्र से मुक्त होकर परम शांति और आनंद की स्थिति है। इसलिए, गीता में मोक्ष और आत्मसाक्षात्कार को जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य मानते हुए गुरु-शिष्य संबंध को अत्यंत महत्वपूर्ण और पवित्र बताया गया है।

सारांश के रूप में, श्रीमद भगवद गीता शिक्षक-छात्र के संबंध की महत्वपूर्णता को जोर देती है। यह धर्मिक ग्रंथ बताता है कि एक गुरु छात्र के आत्मविकास और ज्ञान के मार्ग में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह ग्रंथ उत्तम शिक्षक की गुणवत्ता और छात्र की जिम्मेदारियों को स्पष्ट करता है। श्रीमद भगवद गीता में दिए गए उपदेशों के माध्यम से शिक्षक-छात्र संबंध का महत्व और मर्यादा व्यक्ति के आत्मविकास और मोक्ष की ओर प्रगामी होती है।

शिक्षक के गुण

शिक्षक को ब्राह्मण के रूप में सम्मानित किया जाता है। "हे गुडाकेश जो सभी प्राणियों के हृदय में विराजमान हैं, आदि, मध्य और अंत भी" (भ. गी. 10.20) । एक प्रभावी शिक्षक किसी समस्या को हल करने के लिए शिष्य की जिज्ञासा को बढ़ावा देने के लिए एक उत्प्रेरक प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता है। वह छात्र की जांच की भावना को प्रोत्साहित करता है और तार्किक सोच विकसित करने में मदद करता है अंततः छात्र आत्मविश्वासी बन जाता है क्योंकि उसकी शंकाएं पूरी तरह से दूर हो जाती हैं। वास्तविक में शिक्षक ही परम सत्य है। गीता के दसवें और ग्यारहवें अध्याय में गुरु के गुणों की स्पष्ट चर्चा की गई है। शिक्षक ज्ञान का अवतार है। शिक्षार्थी अर्जुन अपने शिक्षक कृष्ण के साथ वैदिक ज्ञान पर चर्चा से अत्यधिक प्रेरित महसूस करता है। छात्रों की खुशी से शिक्षक खुद को प्रोत्साहित महसूस करते हैं। अर्जुन अपने गुरु से पूछते हैं कि कोई कैसे

सांसारिक वस्तुओं को देखते हुए निरंतर शाश्वत सत्य के संपर्क में रह सकता है। दुनिया की सभी चीजें और प्राणी प्रत्येक महिमामय आत्मा को पदार्थ से अलग और अलग नहीं दोनों के रूप में दर्शाते हैं । कोई भी शिक्षक इस प्रवचन को जारी रखने के लिए पर्याप्त रूप से प्रेरित महसूस नहीं कर सकता जब तक कि उसके छात्र में सीखने के प्रति उत्साह और रुचि न हो।
कृष्ण अर्जुन को पर्याप्त ज्ञान प्रदान करते हैं। नारद, असित देवल, व्यास जैसे प्राचीन संतों की एक सूची प्रदान करके प्रदर्शन के साथ अर्जुन अपनी जिज्ञासा को तेज करने की कोशिश करता है और एक शिक्षक के गुणों को दर्शाता है (भ. गी. 10. 12/13) । अर्जुन "आत्म होने की जागरूकता" को ज्ञान के रूप में व्यक्त करने में असमर्थ है। इसलिए अर्जुन को सलाह दी जाती है कि "स्वयं को अपने आप से जानो"। "वास्तव में, आप स्वयं अपने आप को स्वयं जानते हैं। हे पुरुषोत्तम, हे प्राणियों के स्रोत, हे प्राणियों के स्वामी, हे विश्व के शासक" (भ. गी. 10.15) । आश्चर्य, श्रद्धा और भक्ति की भावना व्यक्त करने वाले उपरोक्त शब्दों को प्रस्तुत करने के बाद अर्जुन अब सीधे शिक्षक के सामने अपनी बौद्धिक मांगों को व्यक्त कर रहा है। साधकों का लक्ष्य अपने निजी अनुभव में सत्य को जानना है। "मुझे फिर से, विस्तार से बताओ। हे जनार्दन, आपकी योग शक्ति और आसन्न महिमा के बारे में, क्योंकि मैं आपके अमृत जैसे वाणी को धारण करके संतुष्ट महसूस नहीं करता" (भ. गी. 10.18) ।
"दिग्गज में मैं दीप्तिमान सूर्य हूँ"। सूर्य सभी ऊर्जाओं का स्रोत है जहाँ कहीं भी यह महिमामय दिखाई देता है (भ.गी. 10.21.) इसलिए, शिक्षक सभी ज्ञान का स्रोत है। "नक्षत्र में मैं चंद्रमा हूँ"। चन्द्रमा सम्पूर्ण जगत् में शीतल प्रकाश का है किन्तु रात्रि को प्रकाशित करता है। आत्मा अतुलनीय रूप से गौरवशाली, सहज और सुखद है। शिक्षक को भी अपने ज्ञान से आलोकित होना चाहिए और अंधकार रूपी अज्ञान को दूर भगाना चाहिए। शिक्षक अनंत सार है जिसे ऋग्वेद के रूप में संगीत में बदल दिया गया है। "वेदों में मैं सामवेद हूँ। मैं जीवितों में बुद्धि हूँ" (भ.गी. 10.22) ।
शिक्षक की तुलना 'अश्वथवृक्ष' (पीपल के पेड़) से की जाती है जो अमर है और असंख्य गुणवत्ता, ज्ञान और सेवा के साथ है। स्वर्गीय द्रष्टा नारद ईश्वर की भक्ति के लिए लोकप्रिय हैं और मित्र और दार्शनिक के रूप में व्यवहार करते हैं। कपिला, दार्शनिक जो अपनी प्रतिबिंब की कला के लिए प्रसिद्ध हैं (भ.गी. 10.26) । "गायों मैं कामधेनु, (दूध का सागर) हूं" जिससे कोई व्यक्ति अनुरोध करने वाले व्यक्ति की सभी इच्छाओं को पूरा करता है। "मैं नियंत्रकों के बीच 'यमाह' हूं । यम मुख्य संदेशवाहक या सर्वनाश करने वाला है, हर विकास पूर्व विनाश से आगे बढ़ता है। जीवन को उसकी समग्रता में देखा जाता है, 'मौत के सिद्धांत के लिए उतना ही महत्व है जितना कि निर्माण के सिद्धांत के लिए'। विनाश इस प्रकार सकारात्मक प्रगति में योगदान देता है, जिसे "मौत की अपनी रचनात्मक कला" कहा जाता है। जीवन को उसकी समग्रता में देखा जाता है 'मौत के सिद्धांत के लिए उतना ही महत्व है जितना कि निर्माण के सिद्धांत के लिए'। "मैं दैत्यों के बिच प्रहलाद हूँ"। प्रह्लाद, भगवान के भक्त है । उन्हें परम सत्य का बोध हुआ। "मैं राम हूँ" - रामायण में नायक, पूर्ण पुरुष - एक मित्र, बुराइयों से लड़ने वाला, आदर्श शासक और धर्म का अवतार । सभी छंदों में मैं 'गायत्री' हूं, गायत्री को सबसे दिव्य और अत्यंत शक्तिशाली मंत्र माना जाता है जो तीन पंक्तियों में रचा गया है (भ. गी. 10.30/35)। "मैं शास्त्र, सभी सच्चे ज्ञान और मार्गदर्शन का स्रोत हूं"। गीता के अनुसार, शिक्षक एक 'ज्ञान का प्रकाशमान दीपक' है जो अज्ञानता के अंधकार को दूर कर सकता है। "उनके लिए मात्र करुणा से, मैं उनके हृदय में निवास करता हूं, ज्ञान के प्रकाशमान दीपक द्वारा अज्ञानता से पैदा हुए अंधकार को नष्ट करता हूं" (भ. गी. 10.11) ।
"आप विश्व के पिता हैं, चर और अचल हैं। आप इस दुनिया के द्वारा पूजनीय हैं, आप सबसे बड़े गुरु हैं, कोई भी मौजूद नहीं है जो आपके बराबर है, अप्रतिम शक्ति के होने के नाते आप से बेहतर तीनों लोकों में कोई दूसरा कैसे हो सकता है" (भ. गी. 11.43)। गीता घोषणा करती है कि शिक्षक ज्ञान और शक्ति का अवतार है और कोई भी उसके बराबर नहीं है।

शिक्षार्थी के गुण

वास्तविकता को जानने के लिए सीखना व्यक्ति की जिज्ञासा से शुरू होता है। उसके सामने यह समस्या है कि क्या सही है और क्या गलत। सीखने में मन की एकाग्रता एक अपरिहार्य हिस्सा है। शिक्षार्थी जब विषय सीख रहा होता है तो पूरे मनोयोग से अभ्यास करता है। शिक्षार्थी को सिर्फ जानकरियों को एकत्री करना नहीं,अपने आप को अंदर से विकास करना। वह आत्म-केंद्रितता से मुक्त है, अहंकार और गर्व से अप्रभावित है, सदैव हंसमुख, सभी परिस्थितियों और स्थितियों में धैर्यवान है और पूरी दुनिया को उनके घर के रूप में दिखता है (भ.गी. 10)।

वैराग्य, सार्वभौमिक प्रेम, आत्मसंयम, अहंकार से बचना, ये सब एक अच्छे शिक्षार्थी के लक्षण हैं। सभी स्थितियों और अनुभवों में एक बौद्धिक समभाव बनाए रखा जा सकता है। वह संवेदी आयामों से मुक्त है और उसे शिक्षकों की क्षमता पर पूरा विश्वास है। ध्यान में एकाग्रता पूर्ण वस्तुनिष्ठता का गुण बनाती है और वस्तुगत एकाग्रता व्यक्तिपरक एकाग्रता की तुलना में बहुत आसान है। एक शिक्षार्थी 'योग' के अभ्यास के लिए उचित धुन द्वारा अपने मन को तैयार करता है। जल्द ही वह सीखने के लिए पर्याप्त संतुलन और साम्य प्राप्त कर लक्ष्य प्राप्त कर लेता है। वह भावनाओं और अहंकार से मुक्त है। ऐसा शिक्षार्थी दुःख या घृणा से प्रभावित नहीं होता है।

"जिससे किसी को कष्ट नहीं पहुँचता तथा जो अन्य किसी के द्वारा विचलित नहीं किया जाता, जो सुख-दुख में, भय तथा चिंता में समभाव रहता है, वह मुझे प्रिय है" (भ.गी. 12. 15) । डर मौत से भी बदतर है, मौत इंसान से सिर्फ उसका शरीर ही छीन सकता है जबकि डर उसके पूरे व्यक्तित्व को बर्बाद कर देता है। “जब कोई व्यक्ति वस्तुओं के बारे में सोचता है, तो उनके लिए आसक्ति उत्पन्न होती है; आसक्ति से, 'काम’ का जन्म होता है; काम से ‘क्रोध’ उत्पन्न होता है"(भ. गी. 2.62) । चिंता एक और मानसिक दोष है जो मनुष्य की सहनशक्ति को खा जाता है। अतः विद्यार्थी को बिना डरे शांति होकर रहनी चाहिए । उन्हें विश्वास या आशावादिता के साथ चिंता मुक्त होना चाहिए। "उस शांति में सभी पीड़ाओं का नाश हो जाता है, तब शांतचित्त की बुद्धि जल्द ही स्थिर हो जाती है" (भ.गी. 2.65)। छात्र कामुक सुखों से मुक्त होता है और एक सख्त नैतिक जीवन का पालन करता है। उसे अपने कर्तव्य के निर्वहन में तत्पर रहना होगा और अनुशासित जीवन व्यतीत करना होगा। यहां तक कि एक बहुत गंभीर संकट भी अचानक उस पर आ जाता, उसकी समझ को भ्रमित नहीं करता और उसे सुचारू रूप से संभालता है जैसा कि उसे करना चाहिए।

शिक्षक कृष्ण बताते हैं कि संगीत के साथ ऋषियों द्वारा अभिव्यक्ति की प्रक्रिया का तर्क दिया गया है। सटीक भाषा अपने आप में बुद्धि पर लागू होती है। दया और प्रेम दोहरे प्रभाव से सिर और हृदय को शुद्ध करते हैं। "ऋषियों ने घूंट लिया है (क्षेत्र और क्षेत्र के ज्ञान के बारे में) कई तरह से, विभिन्न विशिष्ट मंत्रों में और सांकेतिक ब्राह्मण सूचक शब्द में, कारण और निर्णय से भरे हुए” (भ.गी. 13.5) । संगीत द्वारा भावनाओं को जागृत और नियंत्रित किया जाता है। ऋषियों ने इन दोनों का उपयोग दैवी सन्देश पहुँचाने के लिए किया है। अत: विद्यार्थी अपने मस्तिष्क और हृदय की शुद्धि के लिए संगीत और साहित्य का अर्जन करे और विचारों को पूर्ण रूप से संप्रेषित करे।

छात्र अर्जुन अपनी शंकाओं और समस्याओं के बारे में बार-बार सवाल पूछता है। धैर्य और सहजता के साथ कृष्ण ने उनकी शंकाओं का समाधान किया। सीखने की प्रक्रिया बढ़ने पर अर्जुन शिक्षक की महानता के बारे में अधिक से अधिक जागरूक हो जाता है। शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच का बंधन दृढ़ हो जाता है और चरमोत्कर्ष पर शिक्षक अपने अनंत स्वभाव से अवगत कराकर सभी संदेहों को दूर करता है। जब शिष्य गुरु की महानता के बारे में पूरी तरह से आश्वस्त हो जाता है तो गुरु शिष्य की मुक्ति के लिए परम सत्य का ज्ञान देता है। छात्र पूरी तरह से शिक्षक पर निर्भर करता है और शिक्षक का कर्तव्य उसे अज्ञानता के बंधन से मुक्त करना है। “सभी धर्मों का परित्याग कर केवल मेरी शरण में जाओ, मैं सभी पापों से मुक्त कर दूंगा,

डरो मत " (भ. गी. 18.66) । अंत में गुरु छात्र को अनासक्ति के साथ स्वतंत्र रूप से कार्रवाई करने के लिए स्वतंत्र बनाता है । "इस प्रकार, 'ज्ञान' जो सभी रहस्यों से भी बड़ा रहस्य है, मेरे द्वारा आपको घोषित किया गया है, इस पर पूरी तरह से विचार करने के बाद, अब आप जैसा चाहें वैसा करें "(भ. गी. 18.63) । कृष्ण आश्वासन देते हैं, "तुम मुझ तक पहुँचोगे और यह वास्तव में सब सत्य है, मैं तुमसे सच्चा वादा करता हूँ" (भ. गी. 18.65) जिसका अर्थ है कि यदि वह संसार की सेवा में काम करता है, तो वह परम लक्ष्य तक पहुँच जाएगा। दूसरे शब्दों में आत्म-अनुशासन, भावनाओं पर नियंत्रण और पूरे विश्व के कल्याण के लिए समर्पित सेवा एक छात्र की महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं। विद्यार्थी को जिज्ञासु और आत्मविश्वासी होना चाहिए।

निष्कर्ष

श्रीमद भगवद गीता सिर्फ एक धार्मिक ग्रंथ नहीं है, बल्कि यह एक अमूल्य शिक्षा का स्रोत भी है जो हमें शिक्षा और संबंधों के महत्व को समझने में मदद करता है। श्रीमद भगवद गीता शिक्षा और शिक्षक-छात्र के संबंध को गहराई से समझाने का एक महत्वपूर्ण साधन है। गीता ने हमें यह सिखाया है कि एक उत्कृष्ट गुरु के अनुदेशों का पालन करना शिक्षार्थी के लिए कैसे एक मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है। यहां शिक्षक न केवल ज्ञान का स्रोत होता है, बल्कि उसका सहयोग और मार्गदर्शन छात्र के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षा और शिक्षक-छात्र के संबंध को समझने का यह सार है कि यह एक साझेदारी का रिश्ता है, जिसमें उत्कृष्टता, समर्थन, और समर्पण का एक गहरा आधार है। शिक्षक और शिक्षार्थी प्रेम, सहनशीलता और आत्मविश्वास से एक साथ बंधे होते हैं। शिष्य को गुरु की क्षमता पर अपार प्रेम, सम्मान और विश्वास होता है, गुरु को अपने शिष्य के प्रति अपार प्रेम और सहानुभूति होती है। गीता के अनुसार वे एक ही सिक्के के दो पहलू के रूप में अविभाज्य हैं। दूसरे शब्दों में गीता में गुरु शिष्य संबंध सत्य की खोज के लिए एक दूसरे से अविच्छिन्न रूप से बंधा हुआ है।

ग्रन्थसूची

1. स्वामी प्रभुपाद.(2017). श्री श्रीमदभगवद गीता यथारूप. *भक्ति वेदान्त बुक ट्रस्.* हरे कृष्ण धाम, जुहू, मुंबई-400049
2. लाल, आर. बी.(2016). शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त. *पब्लिकेशंस रस्तोगी,* मेरट ।
3. विनोवा (2019). गीता-प्रवचन. *वाराणसी सर्व सेवा संघ-प्रकाशन* ।
4. शर्मा, सी.(2013). भारतीय दर्शन आलोचना और अनुशीलन दिल्ली. *बनारसीदास मोतीलाल* ।
5. सिन्हा, एच. पी.(2018). भारतीय दर्शन की रुपरेखा, *बानारसीदास मोतीलाल,* दिल्ली. ।
6. ओड, डा लक्ष्मीलाल के., "शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि", *राज हिंदी ग्रन्थ अकादमी,* जयपुर, श्रीमदभगवद गीता का शिक्षा दर्शन, पेज नं. 128-139 ।
7. शर्मा, डा आर. ए,"शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक मूल आधार ",*आर.एल.बुक डिपो,* मेरट, श्रीमदभगवद गीता एवं शिक्षा,पेज नं. 298-311 ।